शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

## सम्पादकीय

# शिक्षा में क्रान्ति

विनोबा

पुरानी बात है। 15 अगस्त 1947, स्वातंत्र्य दिन था। मुझे व्याख्यान देने के लिए वर्धा बुलाया गया। मैंने पूछा कि, देखो भाई, स्वराज्य मिल गया। क्या अब पुराना झंडा एक दिन के लिए भी चलेगा ? तो बोले, नहीं चलेगा। अगर पुराना झंडा चला तो उसका अर्थ होगा कि पुराना राज्य जारी है। जैसे नए राज्य में नया झंडा होता है, वैसे नए राज्य में नयी तालीम चाहिए। अगर पुरानी तालीम ही चालू रही तो समझना चाहिए कि पुराना राज्य ही जारी है, नया राज्य आया ही नहीं। गांधी जी ने दूर दृष्टि से नयी तालीम नाम की एक पद्धति सुझाई। अगर मेरे हाथ में राज्य होता तो सारे विद्यार्थियों को छुट्टी दे देता और कहता कि तीन महीने की आपको छुट्टी है, खेल-कूद लीजिए, ज़रा मजबूत बनिए, थोड़ा खेती का काम कीजिए, स्वराज्य का आनंद भोगिए, तब तक शिक्षा-शास्त्रियों का सम्मलेन होगा और हिन्दुस्तान की नयी तालीम का ढांचा वे तैयार करेंगे। तब तक छुट्टी। परन्तु उसके बदले में चार-चार पंचवर्षीय योजनाएं बनीं, लेकिन तालीम का ढांचा पुराना ही चला आ रहा है।

सरदार वल्लभभाई स्वराज्य के बाद अपने भाषणों में यही कहते रहते थे कि आज का यह किताबे शिक्षण बिलकुल निकम्मा है। इतना ही नहीं, बल्कि हानिकारक है। कोई साधारण या असाधारण विचारक इस तरह बोलता. तो अलग बात होती। पर जिसके हाथ में राष्ट्र और राष्ट्रीय सरकार का सूत्र हो, वही नेता जब ऐसा बोलता है तो सहज ही कोई पूछेगा कि, "अगर आपके मत से प्रचलित शिक्षण-पद्धति इतनी रद्दी है, तो आप उसे बदल क्यों नहीं देते ?" इसके उत्तर में उन्होंने कहा था, "हम सब लोग ऐसे जाल में फंसे हैं कि अब उसमें से निकलना मुश्किल हो रहा है। आजकल सरकार कहती है कि शिक्षा का विस्फोट हुआ है। भारत में शिक्षण बहुत फ़ैल गया है इसलिए नए-नए सवाल खड़े हुए हैं। तो मैं पूछता हूँ कि भाई, किसे अच्छी चीज का विस्फोट कभी होता है क्या ? शिक्षण का विस्फोट हुआ है तो इसका अर्थ यह है कि शिक्षण खराब है। वास्तव में आज वैसा ही है। आज भारत की स्थिति ऐसी हे कि यदि शिक्षण नहीं बढाते हैं तो लोग मूरख रहते हैं और शिक्षण बढाते है तो लोग बेकार बनते हैं। अब बेवकूफ बनो या बेकार। जाकिर हुसेन साहब मुझसे कह रहे थे, "विनोबा जी, आप तो कहते है कि जिनको शिक्षण मिलता है वे बेकार बनते है। परन्तु वे सिर्फ बेकार नहीं बनते, बेवकूफ भी बनते हैं।" उन्होंने मेरी बात में सुधार किया अशिक्षित लोग तो बेवकूफ ही रह जाते हैं, परन्तु शिक्षित लोग तो बेवकूफ और बेकार दोनों बनते हैं। इसलिए आज के शिक्षण का ढांचा तुरंत ही बदलना था। खैर, जो हुआ सो हुआ, अभी भी वह बदले, यह जरूरी है। शिक्षण के आधार पर ही सारा समाज बनेगा। इसलिए शिक्षण का ढांचा बदलने के लिए सब लोगों को निश्चय करना चाहिए। इसका अत्यंत महत्व है। शिक्षण में जल्द-जल्द क्रन्ति होनी चाहिए।